



कवयित्री गीतांजलि श्री के 'माई' उपन्यास में नारी

शोधार्थी: कोडेटि. वीरभद्रम्मा, हिन्दी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टणम, आंध्रप्रदेश -530003, भारत देश

शोध निर्देशक: आचार्य एन. सत्तारायण, हिन्दी विभाग अध्यक्ष, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टणम, आंध्रप्रदेश-530003, भारत देश

सारांश: यह शोध-पत्र गीतांजलि श्री के उपन्यास 'माई' में नारी की चेतना, अस्मिता, और आत्म-संघर्ष के विविध रूपों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेखिका ने नारी पात्र 'माई' के माध्यम से एक ऐसी स्त्री की छवि आकर्षित की है जो पारंपरिक मर्यादाओं में बंधी होते हुए भी आंतरिक रूप से विद्रोह की भावना से युक्त है। उसकी चुप्पी ही उसका सबसे बड़ा प्रतिरोध बन जाती है। उपन्यास में स्त्री जीवन के अनेक स्तर संघर्ष, मौन विद्रोह, अस्मिता की तलाश, और सामाजिक पितृसत्ता के खिलाफ आंतरिक द्वंद्व - प्रभावी रूप से उभरे हैं। इस शोध में विशेष रूप से सुनैना और माई के चरित्रों के माध्यम से स्त्री विमर्श को रेखांकित किया गया है।

की-शब्द: नारी चेतना, स्त्री विमर्श, माई उपन्यास, गीतांजलि श्री, अस्मिता संघर्ष, पितृसत्ता, मौन विद्रोह

कार्यों, रूपों और स्थितियों के अनुसार नारी के अनेक नाम भारतीय साहित्य में प्रचलित हैं, समाज की महत्वपूर्ण ईकाई मानी जाने वाली नारी का स्थान वर्तमान युग में आदर्शमय और आदरणीय है। यह स्थान पाने के लिए सामाजिक एवं पारंपरिक मूल्यों के बीच पिसी जा रही नारी का अस्तित्व नए मूल्य तलाशना आरंभ किया। नारी की बेबसी लाचारी दयनीयता को अनेक साहित्यकारों ने विशेषकर महिला साहित्यकारों ने अपने साहित्य का आधार बनाया। नारी को पीड़ा को केवल कवयित्री ही नहीं प्रेमचंद जैसे महान कवी भी अपने शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं। ऐसे महिला साहित्यकारों में - उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, चंद्रकिरण सोनरिक्सा, शशिप्रभा शास्त्री आदी आती हैं। समकालीन महिला लेखिकाओं में गीतांजलि श्री एक जाना-माना नाम है। स्त्री होने के कारण लेखिका ने स्त्री की पीड़ा को समझा और अपने कथा-साहित्य के माध्यम से स्त्री जीवन के विभिन्न पक्षों को उभेरा है। इनके साहित्य के नारी पात्र अपने जीवन के संघर्षों से झूजते हैं लेकिन हार नहीं मानते। अपने जीवन को नए अर्थ देने के प्रयास में निरंतर संघर्ष करते हैं। जीवन से हारकर निराश नहीं बैठती और नई चेतना से सृजित होकर अपने लक्ष्य को पा लेती हैं। मैं ने आंध्र विश्वविद्यालय के अध्यक्ष और हमारे शोध निर्देशक आचार्य एन. सत्तारायण जी के निर्देशन में इस लेख को सम्पन्न करते हुए आगे कदम उठाये जा रही हूँ।

गीतांजलि श्री का उपन्यास 'माई' में चित्रित माई नारी चेतना की सजीव मूर्ति है। परंपरागत नारी के रूप में कर्तव्यों को निभाती है। घर के सभी सदस्यों की उचित देखभाल करती है। रूढ़िवादी ससुरालवाली की हर ताडना और जली-कटी बातें, सुनती है परन्तु अपनी मर्यादा को नहीं तोड़ती उसकी चुप्पी ही उसका सबसे बड़ा हथियार है। उसकी यह चुप्पी उसके हृदय में उसी विद्रोह की भावना है जो घर वाले पहचान नहीं पाते। "माई की आग की बात तो कभी नहीं उसकी आग तो न बचपन, न जवानी न बुढ़ापे में देखा था। उसने तो आग को भीतर खींचकर ऐसे छुपा लिया कि बाहर निकलती शीतलता में अंगारों का कोई आभास नहीं रह गया। उसकी आग का हम मान ही कर सके बस सोच पाए।"¹ स्त्री को अपने अस्तित्व व अपनी सत्ता के लिए सचेत होना नारी चेतना है। यह केवल वर्गीय नहीं बल्कि समाज के थोथे मूल्यों पर बलिदान हो रहे व्यक्ति के स्वतंत्र अस्तित्व को पहचानने और व्यवस्था के परिवर्तन को मूल्यांकन करने की बेचैनी है। "माई" उपन्यास में सुबोध और सुनैना माठे को हथोड़ी की पितृसत्ता के घेरे से निकालने का हर संभव प्रयास करते हैं लेकिन वह यह नहीं जानते कि आई जलती रही अंदर खींचकर आग को। पर समझे, माई की भी आग थी खोखल आग नहीं थी। जिसका दूसरों के लिए जलना हमने देखा था पर जिसका अपना जलना अपने लिए नहीं देखा था।"²

आज की नारी जागृत है उसके अपने अस्तित्व, अस्मिता, सम्मान के प्रश्न नये नहीं हैं किन्तु उनकी गूँज अभी तक नहीं है। नारी ने अपने पक्ष में स्वयं खड़ा होना सीखा है। अपने सवाल भी खुद उठाना सीखा है। नयी परिस्थितियों में पुराने सवाल नये ढंग से उठाए गए हैं।

“माई उपन्यास के संदर्भ में सुनैना माई की तरह झुकना नहीं चाहती। माई सुनैना को इसी रूप में ढालने का प्रयास करती हैं। आप ही झुक जाती हूँ उस अथाह कमजोरी के आगे, जिसने मुझ ताकतवर को आड़ दी। मेरी बेडियाँ खुलने दी आग लहकने दी, गति आने दी, उसकी अचार कमजोर ने ही लड़ा दिया।”³ भारतीय नारी जितना स्वधिकार का दम भरे और अस्मिता की रक्षा का संकल्प करे, वह सामंजस्य त्याग प्रेम की भावना को त्याग नहीं पाती। पुरुष सदा से अहंवादी और नारी उसके अहं को सहन कर गृहस्थ को चलाती रही है। जब सुबोध और सुनैना माई को उनके अधिकारों के बारे में बताते हैं तो माई इन सबसे अलग छिटक जाती। जब कभी बच्चे माई की खातिर पिता को गलत ठहराते तो माई पति का पक्ष ले लेती। “माई ने बहुत धोखे दिए थे। बार-बार लड़ाई में कमजोर पड़ी थी। हमारी आड़ में खड़ी होती, हम लड़ते जाते अचानक देखते कि जिससे लड़ रहे हैं उसी के पास माई खड़ी है। सकपका के पीछे मुड़ते, माई ने दल बदल दिया है।”⁴

आज नारी में व्यक्तित्व की स्वतन्त्र सत्ता स्थापित करने की छटपटाहट है। ‘माई’ उपन्यास की सुनैना माई को रूप में अपने आपको साकार करती है। माई जिसने उम्र भर केवल सहा लेकिन कभी किसी से कुछ नहीं कहा। सुनैना माई की आवाज बनती है जो माई के बचपन का विद्रोही रूप था। “मैं नहीं समझा पा रही थी सुबोध को कि मेरे अंदर बाहर अब धुँआ-धुँआ हो रहा था पर यही तो असल था यह तो धुँआ था अन्दर बाहर फैला हुआ था जिसमें अनगिनत रिश्तों की मिली जुली ललक और घुटन थी जिनका माधुर्य मुझे साँस खींचने को मजबूर करता है।”⁵ माई की रीढ़ की हड़ड़ी कमजोर है। माँ को सख्त आराम की जरूरत थी। डॉक्टर का कहना था माई को बहुत दर्द होता है। जब उसे उठने दिया तो बाबू माँगे की गाड़ी में उसे अस्पताल ले गए ऐक्स-रे कराने। “डॉक्टर ने कहा कि झुक-झुककर काम करनेवालों का यही हथ्र होता है। लगातार झुके रहने से रीढ़ों के बीच का तत्व घिस जाता है और नसों पर गलत दबाव पड़ने लगता है। कियों झुकनेवाले को झुके रहने में भी दर्द होता है, तनने में भी दर्द होता है। मेडिकल भाषा में डॉक्टर में बताया कि ‘स्पाइनल कौलम’ में रीढ़ों को जोड़नेवाला ‘डिस्क कुशन’ ‘बिगड़ गया है। बाहर की ओर ‘एन्यूलस फाइब्रोसिस’, भीतर को नर्म ‘जेलाटिनस’ तत्व है। ‘न्यूक्लीयस पल्पोसिस’। इसी ‘कुशन’ के सहारे ‘स्पाइन’ में पल्ले किसबिलिटी आती है पर गलत मुद्रा में बैठने, खड़े होने से और ज्यादा काम करने से। ‘स्ट्रेन’ करने से, ‘डिस्क’ घिस जाती है और रीढ़ की हड़ड़ी अपनी सही जगह से हटकर तिरछी होकर नसों पर दबने लगती है। दर्द तो लगा रहेगा अब, डॉक्टर ने बताया। हाँ ‘बेल्ट’ पहन लें, ‘ऐक्सरसाइज’ बताता हूँ, करती रहें, यकने के पहले थोड़ी-थोड़ी देर को आराम कर लें और तब भी दर्द होतो ‘पेनकिलर’ ले लें। वैसे डॉक्टर ने कहा, यह कोई बीमारी नहीं है। औरतों को अक्सर हो जाता है।”⁶

अब वह समय आ गया है कि स्त्री कानून की बैसाखियों का इस्तेमाल न करें तो उसे अपने अधिकार को अपना हथियार बनाना चाहिए। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को केवल झुकना ही सिखाया है। ‘माई’ उपन्यास के संदर्भ में “हरदम झुकनेवालों का यही तकदीर होता है, माई हमेशा झुकी रहती थी। एक मौन झुकी हुई साया सी इधर-उधर फिरती”⁷ “सुबोध और सुनैना माई के झुकने को बुरा मानते हैं। कैसे पहुँचे माई तक ? कैसे उसे पाकर यहाँ से निकाल लाना और किसी तरह बच बचाकर जोचिंदियाँ निकाल लाएँगे, क्या यह वाकई माई की होंगी?”⁸ यह प्रश्न सुबोध और सुनैना का अपने आप से है कि क्या स्त्री की स्थिति में कोई सुधार की आश है। लेखिका ने माई के माध्यम से अपने आप को और अपने माध्यम से भाई को समझाने की क्या कही है जो हर मध्यवर्गीय परिवार की स्त्री की क्या है। माई गड्डु-मड्डु स्मृतियों के सहारे जुटाए संकेतों में कही अनकही कहानी का सिर्फ आभास देती है। इस उपन्यास में लेखिका में कई सवाल उठाए हैं। सुनैना का कहना है। “मुझे माई नहीं बनना मैं माई वैसे भी नहीं बनूँगी, मैं चाहूँ तो कभी माई नहीं बन सकती।”⁹ सुनैना के शब्दों में माई की बारे में एक बार “माई फँसी रही, बस फँसी रही। बाबू की बीमारी ने, चुपके से हमम घुस आए हिकारत के पुट को निगल लिया और बस हमारे अन्दर अपार दुःख उमड़ पड़ा। उस औरत के बावजूद वरन् उसको लेकर भी। रहम बाबू पर भी आता था पर सच तो यह है कि बाबू हमारे लिए माई का विस्तार थे बस। और माई हमारे देखने में, हमारी डोर से जुड़ी थी बस। हर और कुछ देखने के बावजूद, माई की कोई अपरिचित झलक देखी तो आँखें कौतुक में झपकाकर हम फिर अपनी परिचित छवि का अंकन कर डालते। “या यों कर दें कि देखा जो भी, सुना जो भी, जाना वही माई फँसी है, दुखी है, सितम की हारी है, और हम हैं, उसे सँभालने पैदा हुई।”¹⁰

‘माई’ उपन्यास में सुबोध पैदा होने के बाद उसका यादी मतलब सास ने बहू को उसकी बेटा को सिर्फ दूध पिलाने के लिए देती है। बाकी सब दादी ने पालन करती उसकी सासू से। एक बार बच्चा रोते तो उसे डांट पड़ी उसकी सासू माँ से हाल यह हो गया था कि सुबोध किसी बात पर रोता और चुप न होता तो दादा, बाबू, दादी सब अपने-अपने ढंग से हुक्म का वही एक परवाना भेजते। “अरे माई बुलाओ, क्या बात है। बच्चा आखिर क्यों रो रहा है? माई शर्म से गड़ जाती और अपराधी की तरह सुबोध को अपने आँचल में समेट लेती। रात हो या दिन।”¹¹

निष्कर्षतः कहजा सकती हैं कि स्त्री और पुरुष रूप के सहचर्य को यो अधूरों का यह अस्तित्व मानने के बजाए विचारों और सह अनुभूतियों की सहयंता आदि मान लिया जाए तो स्त्री जान जाएगी कि वह पुरुष की पूरक ही नहीं आकी अपनी स्वतंत्र पहचान है। समाजनिश्चक रवैये की उपेक्षा और अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने का संकल्प उसे अपने होने का अर्थ सौपेगा ।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि :

1. गीतांजलि श्री ‘माई’ उपन्यास पृ.स. 49,
2. गीतांजलि श्री ‘माई’ उपन्यास पृ.स.167,
3. गीतांजलि श्री ‘माई’ उपन्यास पृ.स.64,
4. गीतांजलि श्री ‘माई’ उपन्यास पृ.स.126,
5. गीतांजलि श्री ‘माई’ उपन्यास पृ.स.167,
6. गीतांजलि श्री ‘माई’ उपन्यास पृ.स.168,
7. गीतांजलि श्री ‘माई’ उपन्यास पृ.स.85,
8. गीतांजलि श्री ‘माई’ उपन्यास पृ.स.09,
9. गीतांजलि श्री ‘माई’ उपन्यास पृ.स.11,
10. गीतांजलि श्री ‘माई’ उपन्यास पृ.स.149
11. गीतांजलि श्री ‘माई’ उपन्यास पृ.स.39